(५) गिरनारी पर तपकल्याणक...

गिरनारी पर तप कल्याणक, नेमि बनेंगे मुनिराज रे ॥ 1 ॥;

प्रभुजी बारह भावना भायें, परिणति में वैराग्य बढ़ायें,
हम भी बनेंगे मुनिराज रे ॥ 2 ॥

शुद्धातम रस को ही चाहे विषय भोग विष सम ही लागें,
राग लगे अंगार रे ॥ 3 ॥

प्रभुजी वेश दिगम्बर धारें, चेतन की निर्ग्रन्थ निहारें,
बरसे आनन्द धार रे ॥ 4 ॥